मौसमों का शहर

मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी

(यह एक हास्य निबंध है जो मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की पुस्तक 'चिराग़-तले' के तेरह खटमिट्ठे निबंधों में सम्मिलित है। इसमें लेखक ने कराची शहर के मौसमों का मज़ाक़ उड़ाया है। आप इसे कराची शहर का रेखाचित्र भी कह सकते हैं। इसमें दो एक स्थानों पर मिर्ज़ा का भी ज़िक्र हुआ है। मिर्ज़ा, जिनका पूरा नाम मिर्ज़ा अब्दुल वदूद बेग है, यूसुफ़ी के मित्र या हमज़ाद (छायापुरुष) के रूप में उनकी लगभग हर रचना में मौजूद होते हैं। मिर्ज़ा उलटी दलीलों के बादशाह हैं। ये अपनी सनक, उलटी-सीधी दलीलों और विचित्र विचारों के लिए जाने जाते हैं और हमें मुल्ला नसरुद्दीन की याद दिलाते हैं। यूसुफ़ी अपनी अकथनीय व उत्तेजक बातें अक्सर इन्ही की ज़ुबान से कहलवाते हैं:

"मैं अपने शहर की बुराई करने में बड़ाई महसूस नहीं करता। लेकिन मेरा विचार है कि जो व्यक्ति कभी अपने शहर की बुराई नहीं करता वह या तो विदेशी जासूस है या म्युनिसिपलिटी का बड़ा अफ़सर!"

"शाम को आम तौर पर इतनी ओस पड़ती है कि आप चुल्लू से पी सकते हैं।"

"अब से कुछ महीने पहले तक कुछ गर्मी-सर्दी चखे घाघ राजनेता मौसम की ख़राबी को आये-दिन के मंत्रीमंडल में परिवर्तन का ज़िम्मेदार ठहराते थे। उनका विचार था कि कराची का मौसम भी अंग्रेज़ ही की एक चाल है। लेकिन मौसम की मारी जनता को विश्वास हो चला था कि दरअसल मंत्रिमंडल में परिवर्तन के कारण यहाँ का मौसम ख़राब है।"

बात से बात निकालना, लेखनी के हाथों में खुद को सौंपकर मानो केले के छिलके पर फिसलते जाना अर्थात विषयांतर, हास्यास्पद परिस्थितियों का निर्माण, अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन, किरदारों की सनक और विचित्र तर्कशैली, एक ही वाक्य में असंगत शब्दों का जमावड़ा, शब्द-क्रीड़ा, अनुप्रास अलंकार, हास्यास्पद उपमाएं व रूपक, अप्रत्याशित मोड़, कविता की पंक्तियों का उद्धरण, पैरोडी और मज़ाक़ की फुलझड़ियों व हास्य रस की फुहारों के बीच साहित्यिक संकेत व दार्शनिक टिप्पणियाँ, और प्रखर बुद्धिमत्ता यूसुफ़ी साहब की रचना शैली की विशेषताएँ हैं। उनके फ़ुटनोट भी बहुत दिलचस्प होते हैं। इस निबंध में यूसुफ़ी साहब की रचना शैली की अनेक विशेषताएँ विद्यमान हैं।-----अनुवादक)

***

अंग्रेज़ों के सम्बन्ध में यह मशहूर है कि वे स्वभावतः मितभाषी हैं। मेरा विचार है कि वे सिर्फ़ खाना खाने और दाँत उखड़वाने के लिए बोलते हैं। बल्कि यह कहना ग़लत न होगा कि अगर इंगलिस्तान का मौसम इतना घटिया न होता तो अंग्रेज़ बोलना भी न सीखते और अंग्रेज़ी भाषा में कोई गाली न होती। कमोबेश यही हाल हम कराची वासियों का है। मैं अपने शहर की बुराई करने में बड़ाई महसूस नहीं करता। लेकिन मेरा विचार है कि जो व्यक्ति कभी अपने शहर की बुराई नहीं करता वह या तो विदेशी जासूस है या म्युनिसिपलिटी का बड़ा अफ़सर! यूँ भी मौसम, माशूक़ और हुकूमत का गिला हमेशा से हमारा राष्ट्रीय मनोरंजन (INDOOR PASTIME) रहा है। हर पल बदलते हुए मौसम से जिस हद तक लगाव हमें है उसका अंदाज़ा यूँ लगाइए कि

यहाँ बहुत से ज्योतिषी हाथ देखकर आगामी चौबीस घंटों के मौसम की भविष्यवाणी करते हैं और मुट्ठियाँ भर-भरके कमाते हैं।

अब से कुछ महीने पहले तक कुछ गर्मी-सर्दी चखे घाघ राजनेता मौसम की ख़राबी को आये-दिन के मंत्रीमंडल में परिवर्तन का ज़िम्मेदार ठहराते थे। उनका विचार था कि कराची का मौसम भी अंग्रेज़ ही की एक चाल है। लेकिन मौसम की मारी जनता को विश्वास हो चला था कि दरअसल मंत्रिमंडल में परिवर्तन के कारण यहाँ का मौसम ख़राब है।

न्याय की दृष्टि से देखा जाए तो मौसम की बुराई करना नैतिक अनुशासन का एक प्रभावशाली साधन है। इसलिए कि अगर मौसम को बुरा-भला कहकर दिल का ग़ुबार निकालना शहरी शिष्टाचार में शामिल न होता तो लोग मजबूरन एक-दूसरे को गालियाँ देने लगते।

इसमें शक नहीं कि रेडियो की गड़गड़ाहट हो या दमा, गंज हो या पाँव की मोच, नाभि खिसके या नकसीर फूटे, हमें यहाँ हर चीज़ में मौसम का हाथ नज़र आता है। बलग़मी (कफ़-प्रधान) प्रकृति वाला सेठ हो या सनकी कलाकार, हर व्यक्ति इसी पल-पल चोले बदलते मौसम का मारा हुआ है। कोई ख़राबी ऐसी नहीं जिसका ज़िम्मेदार जलवायु को न ठहराया जाता हो (हालाँकि बहुमत ऐसे लोगों का है जिनको स्वास्थ्य की ख़राबी की वजह से मौसम ख़राब लगता है)। एक साहब को जानता हूँ जिन्हें अरसे से बिनौले (कपास) के सट्टे का हौका है। वे भी कराची की जलवायु को ही अपने तीन दिवालों का ज़िम्मेदार ठहराते हैं। एक और सज्जन का दावा है कि मैं अपनी बत्तीसी इसी मनहूस जलवायु की भेंट कर चुका हूँ। देखने में यह बात अजीब ज़रूर लगती है मगर अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि इस प्रकार की जलवायु में चाय और सट्टे के बिना तंदुरुस्ती क़ायम नहीं रह सकती।

और तो और चालान होने के बाद अक्सर पंसारी अपनी बेईमानी को ख़ुदा की मर्ज़ी बताते हुए अपनी सफ़ाई में कहते हैं कि "हुज़ूर! हम मौसम की ख़राबी की वजह से कम तौलते हैं —— सीलन से अनाजों और दालों का दाम दुगना हो जाता है और ज़ंग खा-खाकर बाट आधे रह जाते हैं। नतीजे में गाहक को एक चौथाई सौदा मिलता है! हम बिल्कुल निर्दोष हैं।"

और एक किफ़ायती महिला (जिन्होंने पिछले हफ़्ते अपने 32 वें जन्मदिन पर 23 मोमबत्तियाँ रौशन की थीं) अक्सर कहती हैं कि दस साल पहले मैं घंटों आईने के सामने खड़ी रहती थी। लेकिन यहाँ की आबोहवा इतनी घटिया है कि अब अनजाने में आईने पर नज़र पड़ जाती है तो उसकी "क्वालिटी" पर शक होने लगता है।

लेकिन ग़ुस्सा उन सज्जनों पर आता है जो बिना सोचे-समझे यहाँ के मौसम पर नुक्ताचीनी करते हैं और यह स्पष्ट नहीं करते कि उन्हें कौन सा मौसम नापसंद है। यह तो आप जानते हैं कि कराची में मौसम हर क्षण रूई के भाव की तरह बदलता रहता है। हमने तो यहाँ तक देखा है कि एक ही इमारत के किरायेदार एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल पर जलवायु की तब्दीली के उद्देश्य से जाते हैं। यहाँ आप दिसंबर में मलमल का कुरता या जून में गरम पतलून पहनकर निकल जाएँ तो किसी को तरस नहीं आएगा। कराची वाले इस *जाने क्या हो*

अब आगे रे प्रकार के मौसम के इस क़दर आदी हो गए हैं कि अगर यह दो-तीन घंटे तब्दील न हो तो वहशत होने लगती है और बड़ी-बूढ़ियाँ इसे क़यामत के क़रीब होने की निशानी समझती हैं। होता यह है कि अच्छे-ख़ासे लिहाफ़ ओढ़ के सोये और सुबह पंखा झलते हुए उठे। या पर्यावरण विभाग की भविष्यवाणी का लिहाज़ करते हुए सुबह बरसाती लेकर घर से निकले और दोपहर तक लू लगने के कारण ऊपर-ही ऊपर अस्पताल में दाख़िल करा दिए गए। कहाँ तो रात को ऐसी पारदर्शी चाँदनी छिटकी हुई थी कि चारपाई की चूलों के खटमल गिन लीजिए। और कहाँ सुबह कोहरे का यह हाल कि हर बस हेडलाइट जलाए और ओस से भीगी सड़क पर ख़रबूज़े की फाँक की तरह फिसल रही है। कभी-कभी तो यह कोहरा इतना घना होता है कि नवागंतुकों को कराची का असल मौसम नज़र नहीं आता।

मौसम की चंचलता की यह दशा है कि दिन भर के थके-हारे फेरी वाले शाम को घर लौटते हैं तो अलौकिक मार्गदर्शन के बिना यह निर्णय नहीं ले सकते कि सुबह उठकर भूभल की भुनी गरमा-गरम मूँगफली बेचें या आइसक्रीम!

कराची वासियों को विदेशी सैर-सपाटे पर उकसाने में जलवायु की बड़ी भूमिका है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि इंगलिस्तान का मौसम अगर इतना निर्दयी न होता तो अंग्रेज़ दूसरे देशों को जीतने हरगिज़ न निकलते। मैं यह नहीं कहता कि आप सिर्फ़ मेरी सेहत देखकर यहाँ की जलवायु से बदगुमान हो जाएँ, लेकिन सूचना के तौर पर इतना ज़रूर निवेदन करूँगा कि मुक़ामी चिड़ियाघर में जो भी नया जानवर आता है, कुछ दिन यहाँ की मनभावन बहार देखकर म्युनिसिपल को प्यारा हो जाता है और जो जानवर बच जाते हैं, उनका सम्बन्ध उन प्राणियों से है जिनको प्राकृतिक मौत मरते कम-से-कम मैंने कभी नहीं देखा। मसलन मगरमच्छ, हाथी, म्युनिसिपल्टी के कर्मचारी।

हमने कराची के एक मूल निवासी से पूछा कि यहाँ मानसून का मौसम कब आता है? कई बारिशें भीगे इस सज्जन ने नीले आसमान को तकते हुए जवाब दिया कि चार साल पहले तो बुद्ध को आया था!

यह कहना तो ग़लत होगा कि कराची में बारिश नहीं होती। अलबत्ता इसका कोई समय और पैमाना निर्धारित नहीं है। लेकिन जब होती है तो इस अंदाज़ से मानो किसी मस्त हाथी को ज़ुकाम हो गया है। साल के अधिकतर हिस्सों में बादलों से रेत बरसती रहती है। लेकिन जब छठे-छमाहे दो-चार छींटे पड़ जाते हैं तो चटियल मैदानों में बीर-बहूटियाँ एक-दूसरे को देखने के लिए निकल पड़ती हैं। इस प्रकार का मौसम बेतहाशा "रश" लेता है।

पश्चिमी पाकिस्तान में बरखा-रुत और कराची में जूलाई का महीना था। कियाड़ी की दिशा से मक्खियों के दल-बादल उमंड-उमंडकर आ रहे थे। अत: मैं मच्छरदानी में बैठा आम चूस रहा था कि मिर्ज़ा अब्दुल वदूद बेग आ निकले। छूटते ही कहने लगे कि "लाहौल-व-ला-क़ूवत! यह भी कोई मौसम है —— जैसे इक़बाली मुजरिम को ठंडे पसीने छूट रहे हों! इधर कमबख़्त मक्खियाँ इस क़दर लद्धड़ हो गई हैं कि उड़ने का नाम नहीं लेतीं! आप मानें या न मानें मगर यह सच है कि सुबह क़साई ने मेरे सामने आध सेर रान का गोश्त तौलकर क़ीमा कूटा। मैं बराबर पंखा झलता रहा। लेकिन घर पर बेगम ने तौला तो पूरा तीन पाव निकला!"

वो अंग्रेज़ी फ़िल्में जिनमें बारिश के दृश्य होते हैं कराची में बहुत कामयाब होती हैं। भूगोल पढ़ने वाले बच्चे उन्हें खूब देखते हैं और अपने माता-पिता को दिखाते हैं। धनवान माता-पिता अपने बच्चों को बारिश का मतलब समझाने के लिए रावलपिंडी ले जाते हैं और उन्हें वो हरे-भरे लॉन भी दिखाते हैं जिनपर पानी रूपये की तरह बहाया जाता है। जो संतान वाले इस योग्य नहीं होते वे अपने बच्चों की उंगली पकड़कर क्लिफ़्टन के समुद्री तट पर ले जाते हैं और अपनी ऐनक रूमाल से साफ़ करते हुए उन्हें समझाते हैं कि देखो! सामने जो गाढ़ा-गाढ़ा धुआँ उठ रहा है और हमारी ऐनक को धुंधला रहा है, यह दरअसल पानी है जो भाप बनकर उड़ रहा है। देखते-ही-देखते ये ऊदे-ऊदे बादलों से जा मिलेगा। ये बादल समुद्र से पानी भरकर हर साल उत्तर दिशा में ले जाते हैं:

जो अब्र यहाँ से उट्ठेगा, वह सारे जहाँ पर बरसेगा
यह शहर हमेशा तरसा है, यह शहर हमेशा तरसेगा[1]

समुद्री भापों का ज़िक्र आते ही उन दो देहाती मौलवियों का क़िस्सा याद आ गया जो पहली दफ़ा 'हॉक्स बे' का जीता जागता किनारा देखने गए थे। वहाँ उन्होंने देखा कि एक महिला काला बुर्क़ा पहने नहा रही हैं। उनसे थोड़े फ़ासले पर कुछ स्त्री-देहें झाग और धुंध में इधर डूबती हैं, उधर निकलती हैं। सामने एक गोरी लड़की धूप में नहाई हुई रेत पर बैठी अपना बदन संवला रही थी। मालूम होता था कि उसकी बे-बंद की हल्की नीली अंगिया केवल संकल्प-शक्ति के बल पर टिकी हुई है। दोनों सज्जन देर तक खुदा की क़ुदरत का तमाशा देखते रहे। एकाएकी पहले मौलवी साहब जो उम्र में बड़े थे और ऐनक लगाए थे, घबराकर चीख़े "हाजी इमाम बख़्श! खुदा के लिए नज़रें नीची कर लो! मैं तो अंधा हो गया हूँ!"

यहाँ जलवायु में जल, और जल में नमक की अधिकता के कारण मौसम हर समय सलोना रहता है। ज़ाहिर है ऐसी जलवायु में ताजिर (व्यापारी) और मुहाजिर के सिवा और कोई ज़िन्दा नहीं रह सकता। सब्ज़ा (हरियाली) और फल-फुलवारी की दुर्लभता का इससे अनुमान लगा लीजिए कि यहाँ सब्ज़ा[1] का मतलब सौ रूपये का नोट होता है और तरबूज़ और गन्ने की गिनती फलों में होती है। अक्सर भले घरों में रेफ़्रीजेरेटर को सिर्फ़ सुराही के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। मैंने खुद अपनी आँखों से एक रेफ़्रीजेरेटर में मिट्टी के फल रखे देखे हैं। यूँ कहने को यहाँ चार-पाँच नदियाँ ज़रूर हैं जो कराची के नक़्शे पर साल भर रहती हैं। ये कराची के लिए बड़ा वरदान हैं। इसलिए कि इनके पेटे से पी.डब्ल्यू.डी. के ठेकेदार साल भर बजरी निकालते रहते हैं।

नगरों की वधू कराची की निर्माणकला में हवा का बड़ा हिस्सा है। यहाँ हर मकान का मुँह काबा (पश्चिम) की तरफ़ होता है। वजह इसकी यह है कि पश्चिम से तेज़ हवाएँ चलती हैं जो ठंडी-ठंडी रेत बरसाती रहती हैं। मुँह पर ज़रा हाथ फेरिये तो महसूस होता है कि मानो अभी-अभी तयम्मुम[2] किया है। प्रामाणिक सूत्रों से मालूम हुआ है कि बजरी के ठेकेदार रात को अपने ख़ाली ट्रक "मलेर नदी" में हवा की दिशा में खड़े कर देते हैं। सुबह तक वे खुद-बखुद बजरी से भर जाते हैं। ख़ाली करने का तरीक़ा भी यही है। (नील की देन अगर

[1] *उस ज़माने में सौ रूपये का नोट सब्ज़ (हरा) होता था। (ले.)*

मिस्र है तो मलेर की देन कराची!) कभी-कभी जब मौसम सुहाना होता है तो यह पछुआ सारा मज़ा किरकिरा कर देती है। अक्सर यह होता है कि अच्छे-ख़ासे आँगन में बैठे ताश खेल रहे हैं कि

चली सिम्त-ए-"ग़र्ब" से एक हवा कि चमन सुरूर का जल गया[3]

संभवतः यह समुद्री जलवायु का असर है कि बदलते हुए मौसमों के इस घने कारोबारी शहर में मछली और मेहमान पहले ही दिन बदबू देने लगते हैं। कभी-कभी जब उमस बढ़ जाती है तो ऐसा महसूस होता है जैसे यह बंदरगाह एक लम्बा-चौड़ा तुर्की हम्माम है जिसमें सब कपड़े पहनकर वाष्प-स्नान कर रहे हैं। कपड़े हैं कि सूखने का नाम नहीं लेते (शायद इसीलिए धोबी दो-दो हफ़्ते शक्ल नहीं दिखाते)। पसीना है कि किसी तरह सूखता ही नहीं। जी चाहता है कि ब्लॉटिंग-पेपर का लिबास बनवा लें। सच तो यह है कि ऐसी गुप्तांग-उघाड़ जलवायु में कपड़े मौसम से बचाव के लिए नहीं, बल्कि क़ानून से बचने के लिए पहने जाते हैं। आम तौर से फ़ैशन मौसम की सुविधा के अनुसार बदलते रहते हैं। चुनांचे आपने देखा होगा कि दूसरे शहरों में ऊँचे घरानों की फ़ैशन-परस्त महिलाएँ ख़ास समारोहों में ख़ास तौर से कपड़े पहनकर जाती हैं। यहाँ उतारकर जाती हैं! लिहाज़ा नृत्य के वस्त्र की काट-छाँट में क़ाबिल दर्ज़ी इस बात की कोशिश करते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा कपड़ा कम-से-कम शरीर का क्षेत्रफल ढांक सके।

शाम को आम तौर पर इतनी ओस पड़ती है कि आप चुल्लू से पी सकते हैं। नायलॉन भीगकर प्याज़ की झिल्ली बन जाता है और गालों पर पेन्सिल से बनी भौहों के रेले बहने लगते हैं। पिछले सनीचर ही की बात है कि मैं टहलता हुआ क्लिफ़्टन जा निकला। देखा कि समुद्र के किनारे एक मेज़ पर मिर्ज़ा अब्दुल वदूद बेग बैठे चाय पी रहे हैं। चाय तो ख़ैर यूँ ही सी थी लेकिन पुडिंग बेहद मज़ेदार निकली। मैंने बैरे से होंठ चाटते हुए फ़रमाइश की कि एक "सिंगल" प्लेट पुडिंग और लाओ तो उसने बहुत रुखाई से जवाब दिया कि इस रेस्टोरेंट में पुडिंग नहीं बनती। लेकिन जब मैंने उसको अपनी प्लेट पर पुडिंग के निशान दिखाए तो फ़ौरन लाजवाब हो गया। दौड़ा-दौड़ा गया और प्लेट में चार बिस्कुट और एक चमचा ले आया।

उसी भीगी-भीगी शाम का ज़िक्र है कि एक सजीला जवान जो कराची में नवागंतुक मालूम होता था सीना ताने सामने से गुज़रा। उसकी मूँछें, किसी के शब्दों में, दो बजने में दस मिनट बजा रही थीं। देर तक मेरी निगाहें उसकी सुनहरी कुलाह (टोपी) के कलफ़दार तुर्रे पर जमी रहीं, जो मोर की मग़रूर दुम की मानिंद फैला हुआ और नए करंसी नोट की तरह करारा था। दस मिनट बाद वह समुद्र के किनारे चक्कर लगाकर लौटा तो क्या देखता हूँ कि वह तुर्रा, जी हाँ वही सरकश (उद्दंड) तुर्रा, उसके मुँह पर दुहाजू के सेहरे की तरह लटक रहा है और उसके नीचे मूँछें चार बजने में बीस मिनट बजा रही हैं।

बरसात की बहारें तो आप देख चुके हैं अब ज़रा सर्दी का हाल सुनिए। यहाँ की सुघड़ महिलाओं को अपने गरम कपड़े पहनने के लिए लाहौर जाना पड़ता है। दिसंबर में यहाँ एक चादर की गर्मी पड़ती है —— यह चादर मच्छरों से बचने के लिए ओढ़ी जाती है। अलबत्ता जब अख़बारों में लगातार ख़बरें आती हैं कि लाहौर में ग़ज़ब की सर्दी पड़ रही है तो कराची वासी लिहाज़न अपने गरम कपड़े निकालते हैं, चिलगोज़े कुटकते

फिरते हैं और उन्ही अख़बारों से पंखा झलते हैं और छींक आते ही कम्बल ओढ़ लेते हैं। हाल यह होता है कि अगर कोई झूठों भी उड़ा दे कि लाहौर में ओले पड़े हैं तो कराची के ज़िन्दादिल लोग फ़ौरन सिर मुंडा लेते हैं।

मिर्ज़ा ग़ालिब के अंग[4] शिथिल पड़े तो वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि स्वास्थ्य नाम है अंगों में संतुलन व संयम का! मुझे ग़ालिब और स्वास्थ्य दोनों प्रिय हैं, लेकिन मैं समझता हूँ कि जहाँ तक मौसम का सम्बन्ध है अंगों का संतुलित मिश्रण जानलेवा साबित हो सकता है। जैकबाबाद की गर्मी, मुल्तान की गर्द, मरी की सर्दी और ग्वादर की सीलन की मिलावट से जिस संतुलित मिश्रण का आविर्भाव होगा वह इस सुन्दर नगरी का मौसम होगा। देश प्रेम की भावना की इससे भयानक परीक्षा और क्या होगी कि इंसान इस मौसम को हँसते-खेलते बर्दाश्त करले और उसके दिल में कभी यह इच्छा न हो कि प्राकृतिक उम्र का बाक़ी समय पहाड़ों में अनकिये गुनाहों से तौबा करने में बिता दे।

(चिराग़ तले)

अनुवादक : डॉ. आफ़ताब अहमद
वरिष्ठ व्याख्याता, हिंदी-उर्दू, कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क

---

[1] मजाज़' लखनवी द्वारा रचित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीर्घ तराने की एक पंक्ति की पैरोडी। (अनु.)

जो अब्र यहाँ से उट्ठेगा वह सारे जहाँ पे बरसेगा
हर जू-ए-रवाँ पे बरसेगा, हर कोह-ए-गिराँ पर बरसेगा
हर सरो-समन पर बरसेगा हर दश्तो-दमन पर बरसेगा
खुद अपने चमन पर बरसेगा ग़ैरों के चमन पर बरसेगा
हर शहर-ए-तरब पर गरजेगा हर क़स्र-ए-तरब पर गरजेगा
यह अब्र हमेशा बरसा है यह अब्र हमेशा बरसेगा

[2] तयम्मुमः दोनों हथेलियाँ, उँगलियों समेत, सूखी और पाक मिट्टी या किसी गर्द की तह जमी हुई सतह, मसलन साफ़ दीवार, पर फेरना और फिर हथेलियों को मुँह और बाज़ुओं पर फेरना। इबादत के लिए अगर वज़ू का पानी न उपलब्ध हो या पानी से किसी बीमारी का ख़तरा हो तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी जाती है।

[3] *सिराज औरंगाबादी (1712-1763) के निम्नलिखित शेर की पैरोडी है:*

चली सिम्ते-ग़ैब से एक हवा कि चमन ज़हूर का जल गया
मगर एक शाख़-ए-निहाले-ग़म जिसे दिल कहें सो हरी रही

सिम्ते-ग़र्ब: पश्चिम दिशा; सिम्ते-ग़ैब: परलोक या अंतर्जगत की दिशा; शाख़-ए-निहाले-ग़म: ग़म के पेड़ की शाख़ (अनु.)

[4] *ग़ालिब के निम्नलिखित शेर की ओर संकेत है:*

मुज़महिल हो गए क़ुवा ग़ालिब // अब अनासिर में वह एतेदाल कहाँ

अर्थात ओ ग़ालिब, अंग शिथिल हो गये या शक्ति क्षीण हो गई, अब अंगों में वह संतुलन या संयम कहाँ रहा। (अनु.)